# भारत की संगीत पद्धतियाँ

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति
( हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति
भात खंडे पद्धति
पलुष्कर पद्धति

कर्नाटक संगीत पद्धति
(दक्षिणी संगीत पद्धति )
कर्नाटक ताल पद्धति

**कर्नाटक ताल पद्धति :-** कर्नाटक ताल लिपि पद्धति उत्तर भारतीय ताल पद्धति से सर्वदा भिन्न है |

(1) कर्नाटक ताल पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कर्नाटक ताल पद्धति में ताल के ठेके के निश्चित बोल नहीं होते हैं, केवल अंगों द्वारा ताल का स्वरूप दिखाया जाता है |
(2) ताल की मात्रा एवं विभाग निश्चित होते हैं | उत्तर में जिसे विभाग कहते हैं कर्नाटक (दक्षिण ) में उसे अंग कहते हैं |
(3) तालों को लिखने के लिए अंगों का प्रयोग किया जाता है :-
ये अंग मुख्य 6 होते हैं , जिन्हें षडांग भी कहते हैं इनके नाम हैं:-

| क्र, | नाम | चिन्ह | काल नाम |
|---|---|---|---|
| (1) | अणु द्रुत अंग | | 1 मात्रा |
| (2) | द्रुत अंग | 0 | 2 मात्रा |
| (3) | लघु अंग | 1 | 4 मात्रा |
| (4) | गुरु अंग | S | 8 मात्रा |
| (5) | प्लुत अंग | 3 | 12 मात्रा |
| (6) | काक पद | X | 16 मात्रा |

जब एक मात्रा का विभाग होता है तो कर्नाटक ताल पद्धति में, अणु द्रुत अंग का प्रयोग किया जाता है इसका चिन्ह है अर्द्ध चंद्रा कार ( ) |
जब दो मात्रा का विभाग होता है तो उसके लिए द्रुत अंग का प्रयोग किया जाता है इसका चिन्ह है शून्य (0)

जब चार मात्रा का विभाग होता है तो कर्नाटक ताल पद्धति में लघु अंग का प्रयोग किया जाता है जिसका , चिन्ह है खड़ी रेखा (I)

जब आठ मात्रा का विभाग होता है तो कर्नाटक ताल पद्धति में गुरु अंग का प्रयोग किया जाता है जिसका चिन्ह अवग्रह है (S) |

जब 12 मात्रा का विभाग होता है तो कर्नाटक ताल पद्धति में प्लुत अंग का प्रयोग किया जाता है जिसका चिन्ह है खड़ी रेखा के नीचे अवग्रह (I/S)

जब सोलह मात्रा का विभाग होता है तो कर्नाटक ताल पद्धति में काक पद अंग का प्रयोग किया जाता है जिसका चिन्ह धन का निशान है (+) | उपर्युक्त अंगों का संक्षिप्त में विवरण इस प्रकार है:- (1)

इस ताल पद्धति को समझने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि इन तालों की रचना करने वाले विभागों को अंग कहते है |तीन ताल का ठेका कर्नाटक पद्धति में :- ।।।।
एक ताल का ठेका ० ० ० ० ० ०

| क्र,सं | अंग का नाम | मात्रा | चिन्ह |
|---|---|---|---|
| (1) | अणु द्रुत अंग | 1 | |
| (2) | द्रुत अंग | 2 | 0 |
| (३) | लघु अंग | 4 | 1 |
| (4) | गुरु अंग | 8 | S |
| (5) | प्लुत अंग | 12 | I/S |
| (6) | काक पद | 16 | + |

कर्नाटक ताल पद्धति में मुख्य सात तालें होती हैं जिन्हें सप्त सुलादि ताल भी कहते हैं:-

(1) ध्रुव ताल ।
(2) अट ताल ।
(3) झम्प ताल ।
(4) त्रिपुट ताल ।
(5) एक ताल ।
(6) मठय ताल ।
(7) रूपक ताल ।

| **नाम ताल** | **चिन्ह** |
|---|---|
| ध्रुव ताल के अंग हैं :- | I o I I अर्थात 4,2,4,4 |
| अठ ताल के अंग हैं | I I o o अर्थात 4,4,2,2 |
| मठ ताल के अंग हैं :- | I o I अर्थात 4,2,4 |
| त्रिपुट ताल के अंग हैं :- | I o o अर्थात 4,2,2 |
| झम्प ताल के अंग हैं :- | I o अर्थात 4,1,2 |
| रूपक ताल के अंग हैं :- | O + या I ,o ,अर्थात 4,2 |
| एक ताल के अंग हैं :- | I अर्थात 4 |

इन तालों के रचना क्रम इस प्रकार हैं:-

(1) इन तालों में अणु द्रुत , द्रुत और लघु केवल तीन अंगों का प्रयोग किया गया है ।
(2) प्रत्येक ताल में लघु का प्रयोग अवश्य किया गया है । |
(3) ध्रुव , मठ और अट तालों में लघु की संख्या एक से अधिक है ।
(4) ध्रुव तथा अट ताल में चार चार अंग हैं | मठ ,झम्प और त्रिपुट में तीन-तीन तथा रूपक में दो और एक ताल में केवल एक अंग है ।

इन सात तालों की त्रिस्त्र,चतस्त्र , खंड, मिश्र और संकीर्ण ये पांच जातियां मानी गई हैं इनमें तिस्त्र का अर्थ है तीन , चतस्त्र का चार ,खंड का पांच , मिश्र का सात, तथा संकीर्ण का अर्थ नौ अक्षर काल से है |

आज भारत वर्ष में संगीत की दो पद्यतियों प्रचार में हैं :- एक उत्तर भारतीय दूसरी दक्षिणी भारतीय संगीत पद्यति जिसे कर्नाटक संगीत पद्यति भी कहते हैं इसका प्रचार मैसूर, मद्रास, त्रिवेंद्रम आदि कर्नाटक के प्रांतों में मुख रूप से होता है , कर्नाटक पद्यति में मुख्य चार सिद्धांत हैं:-

**(1) <u>काल प्रमाण</u> :-** संगीत में लगने वाले समय को काल या प्रमाण कहते हैं | कर्नाटक पद्धति में समय नापने की क्रिया की दो इकाइयाँ पाई हैं:- एक अक्षर काल
दूसरी मात्रा

इन दोनों इकाइयों में परस्पर 1:4 का संबध है यदि अक्षर काल 1 मात्रा का है तो मात्रा 4 का 1 अक्षर काल का प्रयोग 35 तालों की पद्यति में किया जाता है और मात्रा का 108 तालों की पद्यति में प्रयोग किया जाता है |

**(2) <u>अंग</u> :-**जिस प्रकार उत्तर भारत की तालों में विभाग होते हैं उसी प्रकार कर्नाटक की तालों में अंग होते हैं | ताल के विभिन्न खंड या मार्गों को अंग कहते हैं अंग की संख्या 6 मानी गई है | जिनके नाम :- अणु द्रुत,द्रुत अंग , लघु अंग, गुरु अंग, प्लुत अंग, काक पद अंग हैं |

**(3) <u>जाति :-</u>** कर्नाटक पद्धति मे जातियों का विशेष महत्त्व है | तालों के विभागों की मात्रा संख्या में परिवर्तन से उसका जो वजन बदल जाता है उसी से तिस्त्र 3 चतस्त्र 4, मिश्र 7, खण्ड 5 संकीर्ण 9 नामक पांच जातियां बनती हैं दो मात्रा वाले वर्णों को सभी जातियों में मिलाने का विधान है |

**(4) <u>विसर्जितम</u> :-** कर्नाटक पद्धति में खाली के स्थान पर विसर्जितम का प्रयोग किया जाता है परन्तु उत्तर तालों के विपरीत वहां के किसी विभाग का आरम्भ विसर्जितम् से नहीं होता वरन किसी विभाग के बीच की मात्राओं के गिनने का साधन मात्र है विसर्जितम तीन प्रकार का माना गया है :-

(1 )पातांग विसर्जितम
(2) कृषय विसर्जितम
(3) सर्पणी विसर्जितम

**कर्नाटक <u>की तालें</u> :-** मुख्य सात तालें हैं जो चतस्त्र जाति (लघु=4 ) में निम् प्रकार से हैं:-

| सं | नाम | विभाग सं | ताल की मात्रा की सं | चिन्ह | अंग या मात्रा सं |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ध्रुव ताल | 4 | 14 | I.0 1 ,I | 4,2,4.,4 |
| 2 | मठ ताल | 3 | 10 | I,o,I | 4,2,4 |
| 3 | रूपक ताल | 2 | 6 | I,o | 4,2 |
| 4 | झम्प ताल | 3 | 7 | I o | 4,1,2 |
| 5 | त्रिपुट ताल | 3 | 8 | I,o,o | 4,2,2 |
| 6 | अठ ताल | 4 | 12 | I ,I ,o,o | 4,4,2,2 |
| 7 | एक ताल | 1 | 4 | I | 4 |